

# स्मृतियों की झील में

कवि प्रकाशन, बीकानेर

# स्मृतियों की झील में

रमाकात शर्मा



कवि प्रकाशन
लखोटियो का चोक,
बीकानेर 5

ISBN 81 864336 18 9

लेखकाधीन

कृति स्मृतियों की झील में
कवि रमाकात शर्मा
संस्करण १६६६
मूल्य नब्बे रुपया मात्र
आवरण अनिरुद्ध उमट
आकल्पन दीपचन्द
मुद्रक सॉखला प्रिंटर्स
चन्दन सागर के पास बीकानेर

SMRITION KI JHEEL MAIN (Hindi Poems) Rs 90/
By Ramakant Sharma

त्रिलोचन के लिए

श्रेयश्च प्रेयश्च मनु यमेत
स्तो सम्परीत्य विविनक्ति धीर
श्रेयों हि धीरोऽभि प्रयसो वृणीते
प्रयो मन्दो योगक्षेमाद्वृणीते ।

श्रेय प्रेय दोना ही/जीवन में आते रहते ह/
समय समय पर/हर मनुष्य के/यही मनुष्य के
स्वविवेक की/कठिन कसोटी/यही परीक्षा का
क्षण हे उसका/उसके आत्मज्ञान का। धीर
पुरुष आत्मज्ञान से/सदा श्रेय का वरण करेगा/
ओर इन्द्रियसुख लोभी/महामूर्ख/श्रेय की ओर
वढेगा/नचिकेता । यही दो पथ जीवन के/
इनसे/किसी एक पर/जन को चलना हे।
(कठोपनिषद् हिंदी काव्यातर)

# अनुक्रम

## खूबसूरत दुनिया

हाथ
महज हाथ
नहीं होते
सृजन और सौंदर्य की
संधि रेखा
होते हैं हाथ

वे ही
फूलों में
भरते हैं खुशबू

और
धरती के रस से
सींचते हैं सृष्टि

आत्मीय रिश्तों के
नरम नरम

घर होते हैं हाथ

वे शिलाखण्डों में
आँकते हैं
हृदय स्पंदन
और खोजते हैं
सपनों की पदचाप

लगातार
घिसती हुई
हाथ की लकीरों से
पैदा होती है
दुनिया

रहने
और
जीने लायक
खूबसूरत दुनिया।

## पहली किरन के साथ

भोर की
पहली किरन
के साथ
रक्ताभ कोंपले
चिहुक उठी

अलसाई
भोर ने
ओस नहा
शुरु किया
सजना सवरना

पाखी
पख तोल रहे
जागी
गगन छूने की
कामना

कलियाँ मुस्कराई
तितली शरमाई
खेतों की माँग भरी
मंदिर की ज्योत जगी
जाग उठा
जीवन सगान

किरना ने
गान किया
धूप ने
घुंघरू छमकाए
हवा ने
बांसुरी बजाई
नाच उठी
पृथ्वी
झूम उठा
आसमा।

## घर के सपने

बच्चे
खेल रहे ह
घर घर

गीली माटी से
बनाते ह घर
नीम की पत्तियो से
सजाते हे घर

घर मे
कमरे
आर कमरो म
खिलाना के
सपने
देखते ह बच्चे

दूर खडा
पिता
देख रहा ह
बच्चा का खेल
आर
अचानक
हो जाता हे उदास
दो वक्त की

रोटी जुगाड़ने में
उतरी
बीत गई जवानी
और
उतर आई धूप
बालों पर

घर के सपने
अब उसकी
आँखों में नहीं आते

सपने देखना
छोड़ दिया है
पिता ने

लेकिन
बच्चे हैं कि
जरूर खेलते हैं
घर घर

बच्चों की
आँखों में
जिंदा हैं
घर के सपने।

जरूर आओगे ।

म जमीन पर
कविता लिखूँगा
मेरे शव्द
फस्ले वन कर
मुस्कराएँगे
विम्बो की वालियाँ
भावा की गध लिए
झूम उठगी
विचारो के पात
वर्फीली हवाओ मे
नयी नयी
जवान धुन गुनगुनाएँगे

ओर
तुम !
एक दिन
जरूर खिचे
चले आओगे
वेताव भँवरा की तरह
मेरी कविताआ के करीव
खुशवू
रग
रस
आर गध
लेने के लिए ।

## जगली घास
(लू भुन को पढते हुए)

जी हॉ ।
जनाव ।
जगली घास को
किसी भी सूरत मे
नही किया जा सकता
ध्वस्त ।

चाहे
हजार वार
उसे कुचलो
काटो
आर जलाओ ।

जगना
घास जो टहग
जड मे नहा कटती
अभी कुचला
फिर तन गई

अभी काटा
फिर बढ गइ
अभा जलाई
फिर हरियाइ
इसे
जितना काटोगे
वटता चला जायेगी।
इसीलिए
कहता हूँ जनाव ।
जगली घास
नही होगी ध्वस्त
नही होगा पस्त ।

## अनाज का दाना

अनाज का दाना
या'नी वक्त का खाना
गर मिल जाए
तो बन जाए
यह जिंदगी
एक
खूबसूरत गाना ।

## गुडिया, गेद और दूध का गिलास

मेरे बेटे !
म जानता हूँ
कि टूटी ठीकरियो
ओर खट्टी छाछ से
तग हो कर
तू चाहने
लगा हे
गुडिया, गेद
ओर गरम गरम
दूध का गिलास ।

ओर
तेरा यह चाहना
गरवाजिव भी नही ।

तूने
कब चाहा चॉद
कहॉ चाहे तारे
कब चाहा
फूलो का वागीचा
कहॉ चाही
रथ की सवारी

तेरी चाह भी
बहुत मामूली है
बेटे ।

लेकिन
तुझे
कैसे बताऊँ
कि तरसा किया है
मेरा भी बचपन
मामूली चीजों के लिए

गुडिया
और गेंद
की जगह
पत्थर के
टुकडो से
खेला है बचपन
और माटी में
रादी गई
मेरी भरपूर जवानी

हाँ बेटे
बहुत पुरानी है
कहानी

तेरे बाबा के बाबा भी
इसी कहानी को
सुनते सुनाते रहे
और बीत गए
बरसो बरस ।

लेकिन
एक बात ह बेटे।
यदि
तू और म
मिल कर
देखे सपना
ठेलना शुरु कर
पहाड
होने द
आँधियों मे
किरकिरी आँखे

तो तुझे
भले नही
पर कल तेरे बेटे को
जरूर मिल जायेगी
गुडिया, गेद
और गरम गरम
दूध का गिलास।

## चिट्ठी का चेहरा

डाकिए
बड़े चाव से बाँट रहे है
चिट्ठियाँ

आज होली है
होली की रामराम
के साथ
इनाम की उम्मीदे
अपनी आँखो मे
तहाए हुए है
डाकिए

चिट्ठियो के चेहरे
आज हो उठे
रगीन
रगो मे जैसे
नहाए हुए है
चिट्ठियाँ।

## तब वह नहीं होगा

उसने कहा
नाचो
सब घूमने लगे

उसने कहा
गाओ
सब गुनगुनाने लगे

उसने
'खिडकी' कहा
तो सब खुल गए

उसने
'गलीचा' कहा
तो सब बिछ गए

शेर कहने पर
दहाडे
भेड कहने पर
मिमियाए

उगन में।
हमी
सब गुलाब बन गए

उगे बाग
आकाश
सब किताब बन गए

किसी ने
पलट कर
यह नहीं पूछा

तुम कौन हो?
तुम क्या हो?
तुम क्या हो ?

जब प्रश्न नहीं होते
तब वह होता है
जब प्रश्न होंगे
तब
वह नहीं होगा।

## प्यार का रग

प्यार का रग
सब रगो से बेहतर
सब रगो से न्यारा
सब रगो के ऊपर

रचबस गया
इस रग म
फूलो का रस
भँवरे की गूज
दूब की नरमाई
हथेली की गरमाहट
शीत की धूप
और
धूप म
अचानक आया
ठण्डी हवा का
यादगार झोका

प्यार के
रग म
धडकता
लहरो का
जादुई सगीत

[illegible]
बच्चों की किलकारियाँ
और
चिड़ियों का
मासूम गीत

सतरंगे
इन्द्रधनुष की
आकर्षक अदाएँ
पचरंगी
चूनर का
लहराता अल्हड़पन
ओर
न जाने क्या क्या

घंटियों की टुनटुन
नदियों की कलकल
वर्षा की रिमझिम
पत्तों की मरमर

वाकई
प्यार का रंग
सब रंगों से बेहतर
सब रंगों से न्यारा
सब रंगों के ऊपर।

## ठहराव का प्रकाश नहीं

अधूरा-अपूर्ण मैं
पूर्णकाम होना
        नहीं चाहता
सत्य को पाना
नहीं चाहता
सत्य के पास
होना चाहता

देव बनने की
नहीं कामना मेरी
मैं तो देवत्व
गढना चाहता हूँ

ठहराव का प्रकाश
नहीं चाहता
व्याकुल अंधेरा
        चाहता हूँ।

छोटे छोटे
बच्चो की किलकारियां
और
चिड़िया का
मासूम गीत

सतरंगे
इन्द्रधनुष की
आकर्षक अदाएँ
पचरंगी
चूनर का
लहराता अल्हड़पन
और
न जाने क्या क्या

घटियो की टुनटुन
नदियो की कलकल
वर्षा की रिमझिम
पत्तों की मरमर

वाकई
प्यार का रंग
सब रंगो से बेहतर
सब रंगो से न्यारा
सब रंगो के ऊपर।

## ठहराव का प्रकाश नहीं

अधूरा-अपूर्ण मै
पूर्णकाम होना
        नही चाहता
सत्य को पाना
नही चाहता
सत्य के पास
होना चाहता

देव बनने की
नही कामना मेरी
मै तो देवत्व
गढना चाहता हूँ

ठहराव का प्रकाश
नही चाहता
व्याकुल अधरा
        चाहता हूँ।

## रात काली ही सही

रात काली ही सही
उसकी
कोख म उजाला ह
हम उजाले की
तुतली बोली
सुनना चाहते ह

ईश्वर
होगा जरूर
सुना है
उसके बारे मे
हम उसे
धडकते दिल मे
पाना चाहते ह

हवा म
जहर ह
और
डराता ह
मौसम भी
जुलाहे ह हम
नया मौसम
बुनना चाहते ह।

## स्नेह दीप

रक्त के
दीये जले तो
तमस ही
साकार होगा

यदि उजाला
चाहते हो
स्नेह के दीपक
जलओ

दूरियाँ
बढती ही जाएँगी
दिला के दरमियाँ
पास आने के लिए
शायर के नग्मे
गुनगुनाओ।

## जडों की तलाश

कुछ लोग
तलाश रहे ह
जडे

कमर कसे
खोद रहे ह
मिट्टी
तोड रहे हे
शिलाखण्ड

उन्हे
जिद हे कि
ढूँढ ही लेगे
जडे

कोन समझाए कि
मेरे भाई
जडे नही मिलती
इतनी आसानी से

उन्हे
नही मालूम
कि जड
ऑखो मे
बसी ह

सपना की मानिंद
रक्त म
घुली ह
ताप के साथ

वे पसरा ह
उनकी नगा मे
उनकी साँसो मे
उन्ह
नही मालूम
आखिर जड
तलाशते
थक जाते ह
वे ओर
खोदने लगते ह
अपनी ही
जडो को

इस तरह
सूखने लगता हे
हरा भरा पेड

जडों की
तलाश
आसान नही होती

उन्हे
खोजना होता हे
चित्त की भूमि मे अपने ही भीतर
कही
गहरे उतर कर।

## कबीर को पढते हुए

कसे कसे बयान करता हे
जेसे खुशबू का दान करता ह ।

गालियाँ पोथियो को हे देता
ढाई आखर का मान करता ह ।

काबे काशी से कर किनारा वो
आदमी ही का ध्यान करता ह ।

प्यार के परबता पे जा पहुँचा
नान गगा म स्नान करता ह ।

जिक्र जब भेडियो का ह होता
वो निर्तालयो का गान करता ह ।

रग मेहदी के बाँटता फिरता
खुद अंधरा का पान करता ह ।

## बाग में मशगूल मुर्गे

बाग मे मशगूल मुर्गे मोर है नकली
सुबह की लाली का उठठा शोर है नकली।

सूरज तराशने के ख्वाब क्या कीजे
बाजुओ म जो उफनता जोर है नकली।

बादल बिजली ओ' धनक को तरसे ऑखे
पगलाया वो नाचे झूमे मोर है नकली।

आदमी असली कही से ढूँढ लाओ दोस्तो
कि बीसवी सदी का पूरा दोर है नकली।

मत उडाओ ये पतगे इतने ऊँचे आसमा
हाथ नकली, ऑख नकली डोर है नकली।

## उजाले के दरिया में

उजाले के
दरिया मे
आओ नहाएँ
रोशन कतारो मे
खुद को सजाएँ

मन के मकान की
दीवारे पोते
दोस्ती के खेत को
दोबारा जोते
स्नेह के धारे
फिर से बहाएँ

मावस का मौसम
मन से निकाले
मीत के कधे पे
चेहरा टिकाले
मुरझाई कलियो को
फिर से हँसाएँ

आँगन का उजेरा
अन्तस् मे उतरे
बिखर चमन म
खुशबू के कतरे
प्रीत की हथेली पे
मेहदी रचाएँ ।

## हँसी ढूँढता हूँ

पोटली
दर्द की
उठाए घूमता हूँ
अजनबी शहर मे
एक अदद
साथी ढूँढता हूँ।

जहाँ परछाइयाँ भी
साथ अपना
छोड देती हे
अँधेरी
उस गली मे
रोशनी को
ढूँढता हूँ।

यह माना
जिदगी छलती ह
हर बार लेकिन
उखडती सास मे
एक आशा
ढूँढता हूँ।

चमन उदास ह
आर
फूल की ऑख
नम ह
मगर
उडती हुई तितली मे
हँसी ढूँढता हूँ ।

लोग
समझे इसे
दीवानगी
तो समझा किए
बेशक

मे
इस दीवानगी
मे ही
खुदाई
ढूँढता हूँ ।

## आओ मित्र, बातें करें

आओ मित्र
बाते करे
सवेदन का
वरण कर

तुमने
महज पहाडी
नदी सा
धक्केमार होकर
जीना जाना

टकराना
और भाग जाना
तुम्हारी नियति
बन गई

ओर
मने भी तो
तेज आँधी की

किरकिरी बन
तुम्हारी
आँखा म
घुसने की
की हे हिमाकत

आओ मित्र
आज फिर से
अमरूद की डाल पर
बेठे पक्षी का
सवाद बने
ओर
तानपुरे तबले की
सगत मे
ढल जाएँ

यह लम्बी
खामोशी
हमे कही
भेडिया न बना दे
इसके पूर्व
आओ मित्र
बात करे
आर
कबूतर की
गुटरगू में
बदल जाएँ ।

## जन्म लेती कविता

शब्दो की डाल से
टूट कर
गिरता है अथ

अर्थ पर
पसर जाती ह
सस्कारो की रेत

रेत पर
वहने लगता हे
सवेदना का जल

जल पर
तेरती ह
बिम्बो की लहरियाँ

लहरों की उछाल
फिर से छूती ह
शब्दो की डाल

ओर शायद
इस छुअन के वहाने
दिक काल की सीपी मे
जन्म लेती हे कविता।

## कुछ नहीं सीखा

सूर्य ने कहा
जागो
चमको
हम गुफाओं में घुस गये।

नदी ने पुकारा
बढ़ो
चलो
हम बाधों में ढल गये।

हवा ने कहा
गाओ
झूमो
हम सन्नाटे बुन गये।

आग ने ललकारा
जलो
जलाओ
हम राख में दुबक गये

फूल ने समझाया
महको
दहको
हम बिखरे और चुप गये।

यह सच है
हमने
प्रकृति से
कुछ नहीं सीखा।

## सही शब्दों की तलाश

बहुत जरूरी है
सही शब्दो की तलाश

जो
व्यक्त कर सके
बूढे
पेड की
टूटी डालियो के
पीले पत्तो का
दर्द

कटे पंख
कबूतर की
छटपटाहट
और
उडने की बेचैनी

डरे हुए
खरगोश की
आँखो के
रेशमी सपन

# कुछ नहीं सीखा

सूय ने कहा
जागो
चमको
हम गुफाओ म घुस गये ।

नदी ने पुकारा
बढो
चलो
हम वाधा मे ढल गये ।

हवा ने कहा
गाओ
झूमो
हम सन्नाटे बुन गये ।

आग ने ललकारा
जलो
जलाओ
हम राख म दुबक गये

फूल ने समयाया
महको
दहको
हम विखरे आर बुझ गये ।

यह सच हे
हमने
प्रकृति से
कुछ नहीं सीखा ।

## सही शब्दों की तलाश

बहुत जरूरी ह
सही शब्दो की तलाश

जो
व्यक्त कर सक
बूढे
पेड की
टूटी डालिया के
पीले पत्तो का
दर्द

कटे पख
कबूतर की
छटपटाहट
आर
उडने की बचनी

डरे हुए
खरगोश की
आँखा के
रशमा सपन

भूखे
पेट मे
उगे हजारो हाथा की
हलचल ।

बहुत जरूरी ह
सही शब्दो की तलाश
जो
व्यक्त कर सके

गुलाब की
खुशबू के साथ
रोटी की
गध
आर
माटी के
गर्भ से
जन्म लेती पोध पर
वरस रही
जहरीले
पानी की आवाजे

वाकई
बहुत जरूरी है
सही शब्दो की तलाश ।

## तुलसी का चेहरा डरा डरा

तार तार जिंदगी की हो रही ह चूनरी
टूट टूट बिखर रही सपनो की चूडियॉं
सॉस सॉस सुलग रही कागज के ढेर सी
आस-आस प्यास चढे मंदिर की सीढियॉं।

मोसम की पदचाप गुमसुम उदास हे
ऑगन की तुलसी का चेहरा डरा डरा
तितली के पखो के रग आज क्या हुए
फूलो का मन लगता मुरझाया सा जरा।

चॉदनी के ऑचल पे स्याह रग पसरा हे
केसी हे बारिशे केसी हे ऑधियॉं
हिरनी के पॉव बधे कोयल के कठ रूंधे
मन की मुराद ह पतझर की वादियॉं।

## उसने अनुभव किया

उसने
अपनी आँखो के
सपने
लॉकर मे
बंद किये
और
बाहर निकल पडा
शब्दो को
लगभग रोदता हुआ

उसने देखा
संवेदना की
हरियल घाटी
उजाड मे
तब्दील
हो रही है
और
क्षितिज पार
उठ रही है
आग की लपट

उसने अनुभव किया
वादलो के वीच
उभर आइ ह
भयानक आकृतियाँ
आर
जहर वुये पानी म
दम तोड रही ह
पोखर की मछलियाँ

उसे
शब्द खोखले लगे
खाली वरतन से
शब्द की सवेदना
मानो
दम तोड रही थी

वह
डूवते सूरज के साथ
डूवता चला गया
अकेलेपन के
अधकार मे।

## काँटो से बिधने तक

तितली के पख
उसके
पखो से
ज्यादा होते हे
रगीन

लेकिन-
तितली का अत
शायद होता हे
सबसे
सगीन

म
आर
आप
तितली की जिदगी
जीते ह

काटो से विधने तक
रगो म तेरते
रगों मे डूबते ह ।

## ऐसा अक्सर होता है

मुझे
रह रह कर
हड्डियो के
चटखने की
आवाजे
सुनाइ पडती ह ।

रेगिस्तान के
कुआ सी बेबस
प्यासी ऑखे
आर
बादलो की
मनमानी का
सामती अन्दाज
मुझे
बेचेन कर देता हे ।

मेरे
देखते देखते
उजली दीवारों पर
कालिख सनी ब्रश

तेजी से
चलने लगती है
और
अँधेरा ठोस
हो उठता है।

काली रात मे
पहरेदारो की
नुमायशी परेड
और
अनचाहा
नगाडो का शोर
मुझे जोर से
चीखने को
बाध्य करता है

और मै
अपनी पूरी
ताकत से
चीखने लगता हूँ
शताब्दियो से
जकडी जजीरे
खीचने लगता हूँ।

## शिलाओं के बोझ तले

शिलाओं के
बोझ तले
सोए है कोई
दहकते से
जगल मे
रोए हे कोई

तुफान को
पीए हुए
हे बुत बना बेठा
अश्कों से
अपने घाव
धोए हे कोई

बुझने लगे ह
आज शोले
राख की मानिद
उलझनो के वीज
दिल मे
वोए हे कोई

घेरे घेरे
रहते हे
सवालो के भूत
रफ्ता रफ्ता
सॉस सॉस
खोए है कोई

जी रहा हे
जिदगी
ज्यो मरघटी
हो शाम
सलीबो को
अपने काधे
ढोए हे कोई।

## मौसम का इन्तजार

यह मोसम
प्यार का नहीं हे
अभी हवाएँ
वेतरतीव ह
इन्द्रधनुष
डरावने ह

सशय का जगल
सामने खडा ह
भेडिये
गुर्रा रहे हे
भयानक काली रात मे
डायन सी
छमछमाती
खून की बूदे
गुलाव की
पॅखुडियो को
जहरीला बना रही हे

सूरज की
क्षीणकाय रोशनी
काले पहाड के पीछे
कही ठहर गई हे

थोडा सा
इन्तजार और
एक छोटा सा
धूप का टुकडा
मेरे आँगन मे
उतर आये
जरा सा
यह मोसम बदल जाए
तो तुझे
प्यार करूँ।

## जिदगी का अर्थ

जिदगी का अर्थ
एक अँधेरी सुरग से
निकल कर
दूसरी अँधेरी गली मे
प्रवेश करना नही हे

जिदगी का अर्थ
वकरी से भेड
या भेड से वकरी
वनना भी नही हे

जिदगी का अर्थ
दूव सा विछना
या निरीह पक्षी सा
छटपटाना भी नही है

जिदगी का अर्थ हे
आग,
रोशनी,
हवा ओर
पानी
जिदगी का अर्थ हे
खुला आकाश
ओर मुक्त साँस ।

## माँ परेशान है

माँ
परेशान है
बेटा
बुखारग्रस्त है।

माँ
परेशान है
बेटा
स्कूल से नहीं लाटा।

मा
परेशान हैं
वेटे को
नोकरी नही मिली।

माँ
परेशान हे
बेटा ठीक से
खाना नही खाता।

मॉ
परेशान ह
वेटे वहू मे
कुछ अनवन हे।

मॉ
परेशान है
क्योंकि
वेटा परेशान ह।

## डर ही डर

न जाने
आज इतनी
खामोशी क्यो हे

आसपास
कोई
बोलता तक नही

हवाएँ चुप हे
परिंदे उदास
फूल परेशान ह
तितलियाँ निराश

डर ही डर
पसरा है
चारों ओर

मौसम की
साजिश से
बेखबर बच्चे
बस्तों में
सजा रहे हैं
कॉपियाँ-किताबें
माँ से
माँग रहे है टिफिन

इस मौसम में भी
बच्चों को
स्कूल मे बजती
घण्टी सुनाई
दे रही है।

## हत्याएँ

हत्या
सपनो की हो
या
स्वाभिमान की
हत्या, हत्या ही होती है।

हत्याएँ
खून के सुर्ख धब्बे
खोपडी के परखचे
ओर
खूनी माहोल की
दहशतमदी को
क्षितिज की स्लेट पर
मोटे हरफो मे
ऑक देती ह।

असहाय
चिडिया दिन
हत्या की
वारहखडी से
शुरु करता हे
अपना
पहला सबक
आर शाम को

छुट्टी की घटी तक
कॉपी के पन्ने
लहू से तर व तर
हो उठते ह ।

जव हत्याएँ
आत्महत्या की हदे
छूने लगे
तो समझ लीजिए
वादल पानी नही
जहर वरसा रहे हे
जमीन वदवूजदा
हो गई हे
ओर फूलो ने वद कर दिया हे
खूशवू वॉटना ।

चीख का
वेअसर हो जाना
सवेदना की
नरम हथेली पर
नागफणी
उग आने की
शुरुआत हे ।

फिर
अकाल की छाया
मरूथल पर ही नही
हदय भूमि पर भी
गहराने लगती हे
ओर
गर्भस्थ शिशु

घबरा कर
अजन्मा रहने की
दुआ माँगता है।

लाशो के जगल मे
इन्सानीयत की धूप
ढूँढे नही मिलती
भयावह
काली परछाइयाँ
पसरने लगती है
ओर
आदमी बोना होता हुआ
लगभग
अदृश्य हो उठता है।

सडक पर
चद खाकी
वरदियो के अलावा
कुछ नजर
नही आता
सन्नाटे तोडते है
बम बारूद के धमाके।

बच्चो की
किलकारियाँ
माँ की
लोरियाँ
वधुओ के
मगल गीत

मदिर की
आरती
ओर मस्जिद की
अजान
उतर जाती ह
किसी अधे कुएँ मे।

द्वार
खटखटाता
रह जात हे वसत
और हम हे कि
दरवाजे नही खोलते

इस भय से
कि कही
वसत भी
जीवन के अत की
काली चिट्ठी न थमादे
कॉपते हाथों में
हमारे

इस तरह
वेबस ओर
असहाय हम
सुनते रह जाते ह
लोटते हुए
वसत की पदचाप
चुपचाप ! चुपचाप !!

## आओ, कामना करें

आओ
कामना करे
दूध और
अखबार के
रास्ते खुले रहे

जगल मे
खरगोश की
जान
सलामत रहे

भय की
न सॉस चढे
शालाओ मे
वच्चे पढे
प्लेग मार्च का
मोसम
न आए सामने
आओ
कामना करे
रामायण
आर कुरान

एक जिल्द हो
शहर मे
दगो से
फिर न भेट हो
खून की वोछारे
आकृतिया
न रचे
चेहरो पर
गुलाव की
पखुरिया बचे
आओ
कामना करे

कठ कोई
वेसुरा
राग न अलापे
आरती-अजान
उठे
एक साथ मे

आओ
कामना करे।

## पागल दिन

साये
घर आँगन मे
उतरे
पागल दिन घबराए

आओ
सूरज को
समझा दे
फिर न कही
खो जाए

खून के
धब्बो की
शक्लो मे
पहचाने
चेहरे उग आए
सपनो के
बिखरे दानो को
धूप चिरैया
चुग चुग जाए

आओ
मौसम को
समझा द

फिर न फसल
पाला खा जाए

सशय की
पदचाप
तोड जाती
सन्नाटे
गध गुलावो की
आज
चिनगारी वॉटे

आओ
नादल को
समझा दे
फिर न हवा
उसको वहकाए

साये
घर-ऑगन म
उत्रे
पागल दिन घवराए।

## मुस्करा के मिल

राख के ढेर मे
कोई अक्स
ढूँढना केसा
खून के दाग मे
कोई शख्स
ढूँढना जसा

ऑख पथरा गई
ऑसू की नदी
सूख गई

आशिया
तिनका तिनका
सपनो का
विखरा ही किया

मोत का कद
जो इस सदी में
एक वार वढा
ना रुका
फिर कभी
वढता ही गया

रास्ते रोक
रोशनी के
अँधेरे वेटे

साँस के पहरुए
दम तोड़ते
नजर आए

मगर
इक दूब का
मासूम तिनका
यूँ बोला

तनिक
सुस्ता ले सदी
मेरी
हथेली पे ठहर

अभी
चलना है
बहुत दूर
तेज आँधी मे

मेरी
हरियाली
नये साल की
शुभकामनाएँ हे
वो तेरे
साथ रहेगी
उदास घडियों मे

चल नई सदी से
जरा
हँस के
मुस्करा के मिल ।

## जब खत्म होते है आत्मीय रिश्ते

जब खत्म होने
लगते है
आत्मीय रिश्ते
तब
चिडिया भूल जाती है
अपना घर

पेड बदलने
लगता है
फूलो का रग
ओर
खुशबू की जगह
रख देता है
सुलगती चिनगारी

घासले के तिनके
अजनबी आँखो से

देखने लगते हैं
एक दूजे को
ओर
खिसकने लगते ह
अपनी जगहों से
जव खत्म
होने लगते हे
आत्मीय रिश्ते।

पास की
डाल पर
वेठा कवूतर
अचानक
कोए की
शक्ल में
वदल जाता हे

और
डरे सहमे पत्ते
ऑसुओ की
ओट में
दुवक जाते हे

वेचारी चिडिया
वेघर हो कर
भूल जाती हे
उडना फुदकना

और
एकटक
देखने लगती ह

कभी घोसला
कभी डाली
और कभी
डाली पर बेठे
कौए की शक्ल मे
बदले
अपने साथी को

इस तरह
सबकुछ
बदल जाता है
और
चिडिया
खो देती है
अपना घर

जब खत्म
होने लगते है
आत्मीय रिश्ते ।

## आप तो आप हे

आप तो
आप है
आपकी हमारी
बराबरी केसी ?

बेबात
ठहाके
लगा सकते हे
आप

बेमतलब
उदास
हो सकते हे
आप

आप
माई बाप हे
दु खी सुखी
होने की
पूरी आजादी हे
आपको

आपके पास
फुर्सत है
जब चाहे गाएँ
जब चाहे रोएँ
आप
मर्जी के
मालिक हैं

आपके सामने
हमारी
क्या बिसात ?

हम
हँस नही सकते
हम रो नही सकते

सुख दु ख तो
हजूरिए है
आपके
मन बहलाते है
आपका

हम अगर हँसे
तो गुस्ताखी
हम अगर रोएँ
तो नादानी

सच है
आप तो
आप है
आपकी हमारी
बराबरी कैसी ?

## घाव खुशबू के गात

आदमी की हे जात, क्या कीजे
केसी विगडी हे बात क्या कीजे

दूरियाँ दिल के दरमिया ऐसी
प्याद फर्जी की मात, क्या कीजे

शजर की शाख से परिन्दे उडे
सूखे जाए ह पात, क्या कीजे

आरती की अजान से रंजिश
वडी गहरी ह घात, क्या कीज

फूल चिनगारियाँ विखेरे ह
घाव खुशबू के गात क्या कीजे

## कितना बारीक जाल

दोस्ती का खयाल, मत पूछो
बेसुरा राग हाल मत पूछो ।

छत पे दाने बिखेरने का सबब
कितना बारीक जाल, मत पूछो ।

मूरते देवियो की साथ रखे
जिस्म का पर दलाल मत पूछो ।

खत मे खुशबू के सग सन्नाटे
जान का हे बवाल, मत पूछो ।

जिसके दम पे मछलियाँ मचला करे
वो ही सूखे हे ताल मत पूछो ।

दोस्ता की मेहर का क्या कहिए
वार करती ह ढाल मत पूछो ।

## स्मृतियों की झील में

दादाजी
कब से बैठे ह
आँगन मे
ओर
देख रहे ह
नीम चमेली के
झरते पत्ते

दादाजी
यदा कदा ही
बतियाते हे
अपने बेटो से

उनका दोस्त हे
सात बरस का पोता

पोता जो
उनकी छोटी छोटी
जरूरते पूरी
करता है
तमाखू की पुडिया
हथेली पे धरता ह

दादाजी
तेर रहे हे
स्मृतिया की झील मे
स्वर्गीय दादी की
आकृति की लहरे
पकडते हुए

दादाजी
समय की सुई पर नजर गडाए
सिल रहे ह
वीते दिनो के कपडे

दादाजी
अखवार मे
वडे चाव से
खोजते हे
वच्चो के कॉलम
ओर
खुश होते हे
पोते को
चुटकुले सुना कर

दादाजी
अप ी उपस्थिति से
हराभरा करते ह घर

घर का सही सही अर्थ
समझते ह दादाजी।

## यादों के शफ़क़ पर

समुद्र के
रेतीले तट पर
हरे पानी को
सफेद उछालो मे
वदलते देखना
ओर
तेज वोछारों में
भीगते हुए
तुम्हारे साथ वेठना
मुझे
नये अनुभव के
आलोक म
उतारता हे
एकदम
ताजा ओर टटका अनुभव ।

वहुत दूर तक
फेला समुद्र
तुम्हारी
हरी नीली
ऑखो की

गहराई आँकता
जब
मेरे करीब
बार बार बढता है
और लोट जाता है
तो ऐसा लगता है
मानो वह समुद्र नही

तुम हो
जो अक्सर
मेरे करीब भी होती हो
ओर दूर भी
उतनी ही दूर
जितनी समुद्र की लहरे
लोट लोट पडती है
करीब आने के लिए।

तुम्हारा
रोमाचित
मुद्रित
ओर चकित होना
मेरी यादो के
शफक पर
कई अनलिखी
इबारतो का
अचानक उग आना है।

मै तुम्हे
नही भूल सकता
और
न ही भूल सकता हूँ
उस समुद्र को।

## आवाजें

आज मन
उदास हे
सूने ऑगन सा
अकेला
तार तार स्मृतियॉ
बिखरी यहॉ वहॉ
वेचेन सॉसे
थकी-थकी
इच्छाएँ
एकटक
देख रही
दरवाजे खिडकियॉ

आवाजो म
डूब रही
आवाज
भीड मे
खो गये चेहरे

धूप का
एक आवारा टुकडा
आज भी
खिडकी से
झॉक रहा
ऑगन मे
आर
उदास परछाइयो को
देख रहा
आते-जाते

आज मन
उदास हे
सूने ऑगन सा
अकेला।

## सुधियों की गलियों में

मन का समदर
विश्वास के घरादे
चिडियों से चहक उठे
साँस के करादे

वासुरी में रचे-बसे
सपनो के इन्द्रधनु
राधा की पलको मे
थिरक रहे जेसे कनु

मोसम की मनुहारे
मनसिज की पाती
लहर लहर अग चढी
खिची चली आती

भोर के उजाले मे
भूली सी परछाई
कोध उठे बार बार
पगली सी पुरवाई

सुधियो की गलियो मे
जोगी मन डोले
मान पडा मीरा का
इकतारा वोले ।

## नहीं चाहता कोई बधन

हवाएँ
तुम्हारे चेहरे को
उकेरती ह
लहरो मे
ओर
विखर जाती हे
यकायक
गध आर रोशनी की तरह।

म
तुम्हारा चेहरा
पहचानने की
कोशिश मे
हर वार
खो देता हूँ
अपना चेहरा।

मछलियाँ
करती ह
लहरा मे याराना

मगर
पाश मे
नही बँधती
किसी भी शर्त पर।

वे निकल जाती ह
अक्सर दूर
वहुत दूर
दूसरे छोर पर
जहाँ लहरो के
पहचाने
हाथ नही होते

वधन
रेशम का हो
या रस्सी का
नही चाहता
कोई वधन

न मे
न तुम
न हवा
न लहर
न मछली

फिर न जाने क्यो
दायती हे हमे
वधन टूट जाने की
पीडा ?

## बेफिक्र तितलियाँ

महकते ह
जीवन के रग
फूल देखती आँखो मे

गमलो की
कतारो मे
खिलखिलाती हे
साँसो की हरियाली

झरती ह
उदासियाँ
पीले पत्तो
के वहाने लगातार

अकुरित पोध
प्रिय आने की
आहट लगती है

दूव का स्पर्श
वन जाता हे
धडकन का अहसास

वेफिक्र तितलियाँ
मासम की
मनुहार लगती ह ।

## याद-एक

डुबो के पख पोखर मे
जब चिडिया झुरझुराई
तब तेरी याद आई।
भोर के वक्त कोपल पे
ओस की बूँद मुस्काई
तब तेरी याद आई।
इशारे फूल के पा कर
तितली जब भी शरमाई
तब तेरी याद आई।
शाम को रेडियो पे जब
गजल अख्तर ने सुनाई
तब तेरी याद आइ।
धूप की मार को सहते
कही कोइ बेल मुरझाई
तब तेरी याद आई।

## याद-दो

याद तुम्हारी
किरच सरीखी
खुब खुब जाए।
याद तुम्हारी
गॉव सरीखी
मन को भाए।
चूजे जेसी
याद तुम्हारी
रह रह फुदके
गजरे जेसी
याद तुम्हारी
मह मह महके
याद तुम्हारी
घास सरीखी
फिर हरियाई
याद तुम्हारी
ऑख सरीखी
फिर भर आई।

गीतार्पण

म अपने उजले गीत
तुम्ह अपित करता हूँ
सुधियो की स्वर लहरी की
हर लय तर्पित करता हूँ।

तुम थे तो गूँजा करती
वशी की रजित ताने
जीवन सुरभि स महकी
जाती सॉस अनजाने

धडकन से अनुगुजित हर
पलक्षण अपित करता हूँ।

मादक संगीत भरा था
मन ऑगन के हर कोने
ये प्राण वडे व्याकुल थे
सीमा तज इकरस होने।

अपनी ऑखो के सपने
तुमको अर्पित करता हूँ।

ऑधी कुछ ऐसी गुजरी
तिनका तिनका घर टूटा

मोसम की मार पडी थी
हर साथी सगी छूटा

हर बीते पल की यादे
तुमको अर्पित करता हूँ।

## आवारा बादल

पहाड पर
चढते कदमो की थकान
और
खोए प्रेमपत्रो को
तलाशती
ऑखो की बचैनी
महसूसते
आवारा
बादल का टुकडा
ठहर गया है
आकाश मे कही ।

धूसरित हवाएँ
ठेलती है उसे
मरुथल की ओर
जहाँ पानी की
एक बूद
परियो की कहानी से
ज्यादा

प्यारी लगती है
और
गर्म रेत
भूखा बच्ची सी
तडपती है

लेकिन
मौसम के
गीत गुनगुनाता
बादल का टुकडा
चल पडता है
दूसरी ओर किसी खोए
अंदाज मे
सीटी बजाते हुए।

## चेहरा दर चेहरा

रोज शाम
आसमा मे
उगता है
एक चेहरा
बादलो के बीच
पीले लाल रग मे

म
उस चेहरे को
पहचानने की कोशिश म
कई चेहरे
याद करता हूँ

चुरियो के
जाल मे उदासियाँ बुनता
एक चेहरा

गध को जीना
महकता खिलखिलाता

दूसरा चेहरा
गुनगुनाती
रागिनी के
स्वर समेटे
तीसरा चेहरा

एक चेहरा
और अक्सर याद आता है
डरा सहमा
बुझा बुझा
थरथराता है

देर बाद
तमाम चेहरे
मेरी अपनी
शक्ल में
लगते हैं ढलने
और
तब मैं
घबराकर
चेहरे तलाशना
बंद करता हूँ

अपने
चेहरे के
रू ब रू होना
सबसे कठिन है

शायद
सबसे कठिन।

## पीला चेहरा

वह देखता रहा
झड़ते पत्ते
आर
महसूसता रहा
जरदाया
पीला चेहरा

हवा का
खामोश सगीत
बजता रहा
ओर
साँसो की तितली
उदास पडी
सिसकती रही

स्मृति गध
बिखर गई
मरुथल की
रेत सी
आर
सोन हिरनी ने
बद किया
कस्तुरी खोजना

मासम की तरह
आए आर
चले गये
अजनवी राही
बन कर

चुप्पी
खीचती रही
मीलो लम्बी दीवारे

ओर वह
सुराख बनाकर
आर पार
देखने की कोशिश मे
मारा गया

चॉदनी के
कफन ने
ढॅक लिया
पीला जरदाया चेहरा
ओर
पत्तो के झडने का क्रम
जारी रहा
पूर्ववत-यथावत।

## बहुत मुश्किल होता है

बहुत मुश्किल होता है
खिल जाना
फूल की तरह
ओर
मिल पाना
पुराने दोस्त सरीखा

चेहरे की
इबारत पढते हुए
अनुभव बिंबो को
धडकन पर
ऑकना
ओर
सॉसो मे
खुशबू की तरह
उतर जाना भी
कम मुश्किल नही

बहुत ज़रूरी है
सही शब्दो की तलाश
जो व्यक्त कर सके
बूढे पेड़ की
टूटी डालियों के
पीले पत्तो का दर्द।

(सही शब्दो की तलाश)

हाथ
महज़ हाथ
नहीं होते
सृजन और सौदर्य की
सधि रेखा
होते है हाथ।

(खूबसूरत दुनिया)

तार-तार स्मृतियॉ
बिखरीं यहॉ-वहॉ
बेचैन सॉसे
थकी-थकी इच्छाएँ
एकटक देख रहीं
दरवाजे-खिड़कियाँ।

(आवाज़े)